VOL- VII ISSUE- III MARCH 2020 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 6.293 ISSN 2349-638x

उपन्यासकार प्रेमचंद का जीवन दर्शन

ममता रानी
एम.ए. हिंदी, नेट, जे.आर.एफ
भूतपूर्व विद्यार्थी, एम.ए. हिंदी,
कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र, हरियाणा भारत

शोध आलेख सार :

प्रेमचंद हिंदी साहित्य जगत में उपन्यासकार सम्राट के रूप में विख्यात हैं। साथ ही वे युगीन सुप्रसिद्ध कहानीकार भी रहे हैं। प्रेमचंद सच्चे अर्थों में एक महान साहित्यकार थे, जिन्होंने 'कलम का सिपाही' बनकर देश की सेवा की थी।वे अपने युग दृष्टा थे और पथप्रद र्क भी। उन्होंने पराधीन भारत में रहकर एक और तो भारतीय–स्वाधीनता में अपनी कहानियों और उपन्यासों के माध्यम से सहयोग प्रदान किया था तो दूसरी और भारतीय समाज में परिव्याप्त अनेक समस्याओं को रेखांकित करके उनका पर्याप्त समाधान भी प्रस्तुत किया था। उन्होंने अपने जीवन में कटु अनुभव किए थे तथा भारतीय जीवन की विषमताओं को अपनी आंखों से देखा था। मानव जीवन के विषय में उनकी अपनी निजी धारणाएं थीं, वहीं उनकी कृतियों में अभिव्यक्त हुए। 'गोदान' उपन्यास उनकी प्रौढतम कृति है जिसमें उन्होंने जीवन के विषय में अपनी विचारधारा को स्पष्ट किया है। वह स्वयं कहते थे अपने मार्ग,अपने अध्ययन, अपनी फिलॉसफी के बिना कोई सच्चा कलाकार नहीं हो सकता। अपनी आंखों से जीवन देखो अपने अनुभवों से उसे जांचो। जैसा पाओ, वैसा लिखो। गोदान में उनके अनुभव को प्रस्तुत करने वाला पात्र मुख्य रूप से प्रोफेसर मेहता है, जो दर्शनशास्त्र के ज्ञाता हैं, जिनके माध्यम से प्रेमचंद ने अपने जीवन दर्शन पर प्रकाश डाला है।

मुख्य शब्द :मानवतावाद, दुर्भावना, स्वच्छंद, यर्थाथवादी, आदर्शोन्मुखी, दाम्पत्य।

प्रेमचंद मानव जीवन में मानवतावाद के प्रमुख रूप से पक्षधर थे। जब तक इस धरती पर मानवतावाद नहीं होगा तब तक इस वसुधा के जहर को मिटाया नहीं जा सकता। प्रेमचंद जी की विचारधारा थी कि चाहे कोई कितना भी धनवान हो,उसके पास सुख साधन कितने भी हों, उनको मानवता के लक्ष्य को प्राप्त करना आवश्यक है तभी वे अपने जीवन को सफल व सार्थक मान सकते हैं। राय साहब के लंबे संवाद इस बात के साक्ष्य हैं कि भोशक लोग भी मानवीयता को महत्व देते हैं। प्रेमचंद भारत के ऐसे भविष्य की कामना करते थे,जहां सभी स्वयं को पहचाने मानव प्रेम स्वयं जागृत हो जाए। राय साहब अपने अंतरंग मन से दुखी हैं, वे अपने द्वारा किए जाने वाले अत्याचारों को बड़े लोगों के शोषित जन्य व्यवहार को विभिन्न रूपों में उजागर करते हैं।वे यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि जब तक आत्म परीक्षण नहीं होगा, अपनी कमियों और दुर्भावना को व्यक्ति नहीं पहचानेगा तब तक देश में सच्चे मानवीय संबंध नहीं बन सकेंगे।

प्रेमचंद जी का ईश्वर के प्रति ऐसा विश्वास न था जो भारत में पर्याप्त समय से परिव्याप्त हैकि ईश्वर संसार का कर्ता है, वही सब का भाग्य निर्माता है। इसके बिना पत्ता भी नहीं हिलता। जो वह चाहता है प्रत्येक जीव वहीं करता है इत्यादि। उन्होंने ईश्वर के नाम पर होने वाले अन्याय, अत्याचार व अनाचार के विरुद्ध निरंतर आवाज उठाई है। उनका यह स्वर उनकी अनेक कहानियों व उपन्यासों में विद्यमान है। प्रेमचंद इस बात के

भी पक्ष में नहीं थे कि भगवान के भरोसे सभी कुछ छोड़ दिया जाए। उनकी धारणा थी कि हमें आपत्ति आने पर, अवसर आने पर या किसी भी स्थिति में बुद्धि के बल से सोचना चाहिए कि इसका निदान क्या है। सभी कुछ भगवान भरोसे छोड़कर निश्चिंत होना उचित नहीं है। उन्होंने गोदान में प्रोफेसर मेहता के माध्यम से कहा है कि 'उनका ख्याल था कि मनुष्य ने अपने अहंकार में अपने को इतना महान बना लिया है कि उसके हर एक काम की प्रेरणा ईश्वर की ओर से होती है। इसी तरह टिड्डियां भी ईश्वर को उत्तरदायी ठहराती होंगी, जो अपने मार्ग में समुद्र आ जाने पर अरबों की संख्या में नष्ट हो जाती हैं। मगर ईश्वर के यह विधान इतने अज्ञेय हैंकि मनुष्य की समझ में नहीं आते, तो उन्हें मानने से ही मनुष्य को क्या संतोश मिल सकता है।'[1]

प्रेम चंद जी चाहते थे कि मानव को अपने स्वाभाविक रूप से रहना चाहिए। वे प्राकृतिक जीवन जीने के पक्ष में थे, जिसका अर्थ है स्वभाविक जीवन की वृत्ति या प्रवृति। धर्म, ज्ञान, स्वर्ग आदि के चक्कर में पड़ना व्यर्थ है। जीवन का प्राकृतिक आचरण श्रेयस्कर है। वे दिखावटीपन या बनावटीपन में विश्वास नहीं रखते थे। वे न किसी मजहब में विश्वास रखते थे और न पूजा पाठ में श्रद्धा। उन्होंने धर्म का ऐसा रूप देखा था जहां पाखंड ही पाखंड था। वे ऐसे निरर्थक धर्म के पक्ष में नहीं थे। मानव जीवन में सेवा, ममता व सत्य ही धर्म हो सकता है जो मानव के स्वाभाविक आचरण से संभव है। प्रेमचंद की कहानियों में यथार्थ और आदर्श का संगम, सरल और बोलचाल की भाषा में दिखाई देता है, जिसने कहानियों को जीवन के समीप ला खड़ा किया है। जैसा कि कहा गया है 'प्रेमचंद की कहानियां अपने आसपास की जिंदगी से जुड़ी हुई हैं। वे ग्रामीण जीवन से अधिक सम्बद्ध थे, अतः उनकी अधिकतर कहानियों का विषय गांव की जिंदगी से निःसृत है। पर उनकी बहूतेरी कहानियां, कस्बाई जिंदगी, सत्याग्रह आंदोलन, स्कूल और कॉलेज के वातावरण तथा जमींदारों, साहूकारों, क्लर्कों एवं उच्च पदाधिकारियों की समस्याओं और परिवेश की उपज है।'[2]

प्रेमचंद प्रेम को मांसल आसक्ति या कामुक्ता नहीं मानते। जहां तक नर–नारी के प्रेम का प्र न है। प्रेमचंद दांपत्य प्रेम या वैवाहिक प्रेम को ही सच्चा प्रेम मानते थे। वे तलाक आदि के समर्थक नहीं थे। प्रेमचंद प्रेम का अर्थ भोग नहीं मानते थे, बल्कि जीवन का विकास और विस्तार मानते थे। जिसके माध्यम से मानव सेवा का धर्म जागृत होता है। नारी भोग की वस्तु नहीं है, उसकी चरम सीमा मातृत्व है, जो नारी के रूप में उपासक हैं वेनारी के आत्म सौंदर्य को कुरूप कर देते हैं। गोदान उपन्यास में मालती प्रारंभ में मांसल प्रेम की भूखी थी, परंतु जब वह प्रोफेसर मेहता से प्रेम करने लगी तो वह प्रेम के आदर्श को जान सकी। प्रेमचंद ने आदर्श प्रेम को इतना महत्व दिया है कि वह वर्ण और जाति के बंधन को तोड़ कर आत्मा का विषय बन जाता है। प्रेमचंद प्रेम का सच्चा स्वरूप वही मानते थे जहां आत्मा का विकास हो। मांसल प्रेम कोरी का मुक्ता है, वासना की दुर्गंध है। प्रेमचंद प्रेम को देह की नहीं आत्मा की वस्तु मानते हैं।

प्रेमचंद का जीवन के प्रति दृढ़ विश्वास था। इस संसार में जीवन के अतिरिक्त स्वर्ग–नरक, ईश्वर आदि पर उनकी आस्था नहीं थी। स्वर्ग–नरक, पाप–पुण्य ईश्वर द्वारा प्रदत्त नहीं है, बल्कि जीवन को सुधारने के लिए कल्पना मात्र है। लेकिन समाज की एकता में उनका विश्वास अवश्य था परंतु इसके लिए ईश्वर को मानने की आवश्यकता नहीं समझते थे।वे बस यही चाहते थे कि मानव का मानव के प्रति विश्वास रहें, वे एकता के सूत्र में बंधे रहें, आपसी सौहार्दता बनी रहे। यदि हम अपने जीवन में इस प्रकार के कर्म करते रहेंगे जो हमारे लिए वह अन्य के लिए हितकारी होंगे तो मानव जाति का अवश्य विकास होगा। मानव जीवन का सच्चा कर्म यही है कि स्वार्थ से भिन्न कुछ कर्म करें। यश प्राप्त करना, लोभ करना आदि सत्य कर्म नहीं है। सच्ची सेवा उन कार्यों से

है जहां स्वार्थ ना हो। वे सेवा भावना वाले कर्म को महत्व देते थे।

प्रेमचंद ने कहानी के विषय में कहा है कि कहानी एक ऐसी रचना है जिसमें जीवन के किसी अंग या मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथा विन्यास सब उसी एक भाव की पुष्टि करते हैं।'प्रेमचंद जी ने कहानी को जीवन का अंग माना है और कहा कि सबसे उत्तम कहानी वह होती है जिसका आधार किसी मनोवैज्ञानिक सत्य पर हो।'[3]

प्रेमचंद जी नारी को न तो अत्यंत प्राचीन परंपराओं के अनुसार चारदीवारी में रहकर पुरुष का खिलौना मात्र बनकर जीने वाली मानते थे और ना ही पश्चिमी सभ्यता के अनुसार घर से बाहर रहकर स्वच्छंद आचरण करने वाली स्वीकार करते थे। उनकी धारणा थी कि नारी से संसार का सृजन करती है और इसका पालन करती है। सृष्टि के निर्माण का कर्तव्य है उसको पालन पोषण करने का दायित्व उसका महत्वपूर्ण कर्तव्य है, यदि वे शिक्षा प्राप्त हो तो वे संतति को और अधिक सुंदरता के साथ पालन पोषण करने में सक्षम होंगी। प्रेमचंद नारी शिक्षा के समर्थक थे लेकिन पश्चिमी शिक्षा के प्रभावों के विरोधी थे।

प्रेमचंद जी आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी विचारधारा के समर्थक थे। उनके गोदान उपन्यास में एक और तो यह था यर्थाथवादी पक्ष है तो दूसरी ओर आदर्शवादी। कुछ विद्वान आलोचक इन्हें आदर्शवादी कहते हैं, तो कई विद्वान इन्हेंयथार्थवादी विचारधारा के कहते हैं। कई विद्वान इन्हें आदर्शोन्मुखी यर्थाथवादी वादी विचारधारा वाले कहते हैं। यथार्थ और आदर्श का संगम, सरल और बोलचाल की भाशा ने इन्हीं कहानियों को जीवन के समीप ला खड़ा किया है।

प्रेमचंद जी का जीवन दर्शन एक नई विचारधारा को लेकर प्रस्तुत हुआ है। वह ईश्वर, स्वर्ग–नरक, पाप पुण्य आदि में विश्वास नहीं रखते थे। बल्कि बुद्धिवाद समर्थक थे। वे चाहते थे कि व्यक्ति को जीवन के सभी विधान परमात्मा पर नहीं छोड़ देने चाहिए, बल्कि बुद्धिपूर्वक विचार करके अपने अपना कर्तव्य निभाना चाहिए। पाश्चात्य प्रेम का जो वासनात्मक रूप भारत में परिव्याप्त हो रहा है, प्रेमचंद उसके विरोधी थे। प्रेम का अर्थ है आत्मा का विकास। वह तभी संभव है जब नारी और पुरुष मानवता के मार्ग को अपनाएं। यदि समाज का विकास संभव है तो मानवता के मार्ग को अपनाने से ही हो सकता है। नारी और पुरुष समाज के निर्माण में समान रूप से उत्तरदायी है, परंतु उनका जीवन तभी सार्थक है जब वे दाम्पत्य जीवन के महत्व को समझकर आत्मा का विकास करते रहें। समाज में प्रत्येक व्यक्ति का अपना महत्व है उसे स्वाभाविक रूप से जीवन जीने का अधिकार प्राप्त है, जीवन में दिखावटीपन या बनावटी सर्वथा निरर्थक है। इस प्रकार से प्रेमचंद जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से जीवन के प्रति जो विचारधारा प्रस्तुत की थी वह आज के संदर्भ में भी अत्यंत उपयोगी है।

संदर्भ :

1. प्रेमचंद, गोदान, पृष्ठ संख्या 444
2. डॉक्टर नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, दिल्ली 2007, पृष्ठ संख्या 581
3. प्रेमचंद, कुछ विचार 1973, पृष्ठ 53